अकबर कालीन शिक्षा व्यवस्था

प्रीति सिंह

शिक्षा सुधार के क्रम में मुगलकाल में शिक्षा के उद्देश्यों में परिवर्तन आया। जहाँ पूर्व में शिक्षा का उद्देश्य धार्मिक और आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति था, अब इसके स्थान पर राजनीतिक दृष्टिकोण बन गया। भारत का राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक एकीकरण, शिक्षा का उद्देश्य बना। खुले दिमाग से और राष्ट्रीय दृष्टिकोण को अपनाते हुए अकबर ने जाति और धर्म के भेदभाव के बिना सभी के लिए शिक्षा की उचित व्यवस्था की। हिन्दुओं को भी मुसलमानों की भांति उन्हीं विद्यालयों में रहकर, उसी स्तर की शीक्षा उनकी संस्कृति के अनुरूप प्रदान करने की व्यवस्था थी। इस प्रकार अकबर द्वारा किए गए शिक्षा के राष्ट्रीयकरण के दूरगामी सुपरिणाम रहे। इसके फलस्वरूप देश में हिन्दुओं और मुसलमानों में परस्पर प्रेम, सौहार्द और भ्रातृत्व की भावना के विकास से देश में एकता स्थापित हुई। ऐसी एकता सल्तनतकाल में नहीं थी। इस प्रकार अकबर के काल में मुस्लिम भारत में शिक्षा अपने चरमोत्कर्ष पर थी। डॉ० जेम्स एच कॉसिन्स के अनुसार अकबर द्वारा किए गए शिक्षा सुधारों एवं उसके द्वारा प्रयोग जन्य शिक्षा पद्धति का आधार इतना सुदृढ़ था कि आज भी शिक्षा के क्षेत्र में सुधार लाने और शिक्षा को नयी दिशा देने के लिए अकबर के शैक्षिक सिद्धान्तों और उसके द्वारा स्थापित शिक्षा पद्धति को स्मरण रखना चाहिए। अकबर ने अपने विवेक और सूझबूझ से प्रत्येक क्षेत्र में नई व्यवस्थाओं को जन्म दिया था। पुस्तकालय के विस्तार और उसे व्यवस्थित करने की दृष्टि से उसका योगदान सराहनीय रहा है।

अकबरनामा से जानकारी मिलती है कि "हुमायूँ ने शुभ दिन तथा शुभ मुहूर्त में 20 नवम्बर, 1547 को अकबर की शिक्षा प्रारम्भ करने का प्रयास किया। पर जब शिक्षा प्रारंभ करने का मुहूर्त आया, अकबर तभी राजमहल से कहीं खिसक गया और उसका पता नहीं लग सका। मुहूर्त टल गया। फिर भी शिक्षा प्रारम्भ करने की विधि और उत्सव 20 नवम्बर को संभवतः दिन में बाद में सम्पन्न हुआ और हुमायूँ ने उस समय के प्रख्यात विद्वान मुल्लाजादा मुल्ला असमुद्दीन इब्राहिम को अकबर को पढ़ाने के लिए नियुक्त किया।" असमुद्दीन को कबूतरबाजी और खेलों का बहुत शौक था। अपने समय का अच्छा विद्वान होने पर भी वह अकबर को पढ़ाने में असमर्थ रहा। अतः हुमायूँ ने उसे हटाकर मुल्ला बायजीद को शिक्षक नियुक्त किया। शिक्षकों को नियुक्त करने के बाद भी अकबर ने कुछ भी नहीं सीखा हो और वह कोराका कोरा हो, यह तथ्य स्वीकार करने के योग्य नहीं है।

अकबर कुशाग्र बुद्धि और अद्‌भुत स्मरण–शक्ति वाला था। अतः खेल–कूद में अधिक शौक होने से हो सकता है उसने बहुत अधिक ज्ञान प्राप्त नहीं किया हो किन्तु, थोड़ा बहुत तो उसने निश्चित रूप से सीखा होगा। इसलिए यह नहीं माना जा सकता है कि अकबर निरक्षर था। किन्तु मध्यकाल का इतिहास लिखने वाले इतिहासकारों ने उसे अनपढ़ और निरक्षर बतलाया है। इतिहासकारों की इस प्रकार की धारणा बनने का आधार विदेशी पादरियों के वर्णन और उसके पुत्र जहांगीर की टिप्पणी है। फादर मांसरेट ने लिखा है कि वह (अकबर) न तो पढ़ सकता है और न लिख सकता है, किन्तु वह जिज्ञासु प्रवृत्ति का है और विद्वान सदा उसके साथ रहते हैं। इसी प्रकार जेरोम जेवियर और पिन्हीरो पादरी बतलाते हैं कि बादशाह आश्चर्यजनक स्मरण शक्ति वाला है इसलिए पढ़ और लिख नहीं सकता है, फिर भी वह सब जानता है। वॉन नोइर ने भी लिखा है कि अकबर अशिक्षित था। जहाँगीर भी लिखता है कि उसके पवित्र हृदय एवं पुण्यात्मका की अभिरूचि कभी भी बाहरी पढ़ने–लिखने की ओर नहीं झुकी। बेरेरिज, डॉ० बी०ए० स्मिथ, आजाद कई इतिहासकार यह मानते हैं कि अकबर निरक्षर था।

जैसा कि हम जानते हैं कि अकबर जिज्ञासु प्रवृत्ति का था। उसे विभिन्न धर्मों एवं विभिन्न विषयों के सम्बन्ध में जानने की बड़ी लालसा थी। इसीलिए उसने इबादतखान की स्थापना की थी, जहाँ विभिन्न धर्मों के विद्वान और धर्मवेत्ता एकत्रित होकर अकबर

✶ **शोधार्थी, इतिहास विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया**

की अध्यक्षता में शास्त्रार्थ और वाद–विवाद करते थे। इस शास्त्रार्थ में अकबर बड़ी रूचि लेता था। उससे उसे बहुत आत्मतुष्टि होती थी। एक निरक्षर और अनपढ़ व्यक्ति को धार्मिक और बौद्धिक शास्त्रार्थ में कभी भी सुख और संतोष नहीं मिल सकता है।

हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान पण्डित रामचन्द्र शुक्ल यह मानते हैं कि अकबर ब्रजभाषा में कविताओं की रचना करता था। अकबर द्वारा रचित हिन्दी कविताओं के कुछ नमूने, जो कि अकबर शाह और शाह अकबर के नाम से लिखे गये हैं, यत्र–तत्र पढ़ने को मिलते हैं। उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर फादर सांसरेट और जेरोम जैवियर के इस कथन पर विश्वास नहीं किया जा सकता है कि अकबर निरक्षर था और वह न तो पढ़ना और न लिखना जानता था। स्वयं मांसरेट स्वीकार करता है कि उसकी पुस्तक की सामग्री मौलिक नहीं है। वॉन नोडर का वर्णन गोआ में रहने वाले पुर्तगाली पादरी की सूचना पर आधारित है। अतः इसे सत्य स्वीकार नहीं किया जा सकता है। यदि साक्षरता का अर्थ लिखने और पढ़ने से है तो अकबर साक्षर था और यदि शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान प्राप्ति और बौद्धिक विकास से है तो निस्सन्देह अकबर उच्च शिक्षा प्राप्त और विद्वान था।

"अकबर जो कुछ सुनता था या जो कुछ उसे विभिन्न ग्रन्थों से पढ़कर सुनाया जाता था, सभी उसे याद हो जाता था। इसलिए वह दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र और आध्यात्मवाद के विभिन्न गूढ़ विषयों पर अच्छी तरह वार्तालाप और वाद–विवाद करता था। तर्क करने में बड़े–बड़े विद्वानों को परास्त कर देता था। उसे साहित्य, दर्शन, राजनीति, इतिहास, धर्मशास्त्र आदि का अच्छा ज्ञान प्राप्त हो गया था। अकबर विभिन्न ललितकलाओं में विशेष रूचि रखता था। वह अपने युग का बड़ा गुणी और बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न बहुश्रुत सम्राट था।" अकबर विद्यानुरागी और विद्वानों का आश्रयदाता था। दूरस्थ देशों के विद्वान इसके दरबार में संरक्षण प्राप्त कर रहे थे। अकबर का दरबार विद्वानों, वैज्ञानिकों, धर्माचार्यों, दार्शनिकों, कवियों और लेखकों की खान था। विभिन्न जातियों और धर्मों के विद्वान उसकी राजसभा की शोभा में चार चाँद लगाते थे। अकबर के समय में फारसी भाषा के साथ हिन्दी और संस्कृत भाषा और साहित्य का बहुत विकास हुआ था। अबुलफजल और बदायूनी से जानकारी मिलती है कि अकबर ने हिन्दी कविता और कवियों को संरक्षण प्रदान किया था।

अकबर के दरबार में आश्रय प्राप्त विद्वानों, कवियों, इतिहासकारों, दार्शनिकों, आध्यात्मशास्त्रियों, चिकित्सकों, चित्रकारों, संगीतज्ञों और कलाकारों की लम्बी सूची आइन–ए–अकबरी में देखने को मिलती है। उसके दरबार के प्रमुख विद्वान निम्नलिखित थे– अबुलफजल, शेख मुबारक का पुत्र था और अकबर के दरबार का गौरव था। वह एक विद्वान, इतिहासकार और अच्छा लेखक था। फारसी में लिखे उसके दो प्रसिद्ध ग्रन्थ है–अकबरनामा और आइन–ए–अकबरी। मुकातिबातें अल्लामी, रूकआत–ए–अबुलफजल, कश्कोल उसके अन्य ग्रन्थ है। अबुलफजल ने पंचतंत्र का फारसी में अनुवाद किया था और उसका नाम ऐयार–ए–दानिश रखा था। अबुलफजल तुर्की, फारसी, अरबी, हिन्दी और संस्कृत का अच्छा ज्ञाता था। फैजी, अबुलफजल का बड़ा भाई था। वह अपने युग का अरबी, फारसी, और संस्कृत का प्रकाण्ड विद्वान था। फैजी अकबर के दरबार का प्रथम श्रेणी का क वि था और उसे मलिक उस–शुआरा अर्थात् कवि सम्राट की उपाधि प्रदान की गई थी। उसने कई ग्रन्थों की रचना की थी।

ख्वाजा निजामुदीन अहमद ने तबकात–ए–अकबरी नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की थी। वह अपने समय का विद्वान और प्रख्यात इतिहासकार था। शेख अब्दुलहक दहलवी ज्ञान की विभिन्न शाखाओं का ज्ञाता एवं इतिहासका था। उसने कई ग्रन्थों की रचना की थी। इनके अतिरिक्त नाजीरी, उरफी, नकीब खाँ, मीर फतुल्लाह शीराजी, रोख चाकूच, शेख इत्हादार, मुल्ला आलम गुलबहारी काबुली मियाँ वाजी–उद–दीन गुजराती, शेख मुबारक नागोरी अमीर मुर्तजा शरीफ आदि विद्वान और लेखकों को अकबर के दरबार में संरक्षण प्राप्त था। हिन्दू विद्वानों और कवियों में नरहरि, गंग, बहह्या (राजा बीरवल), राजा होडरमल, तानसेन राजा आसकरण, पृथ्वीराज राठौड़ आदि अकबर के समय के चमकते हुए सितारे थे।

भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना के बाद सर्वप्रथम अकबर ने शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषय पर गंभीरतापूर्वक सोचा। अकबर का यह सोचना था कि देश को बनाने और उन्नत करने के लिए लोगों का शिक्षित होना परमावश्यक होता है। उसके आदेश से विभिन्न भागों में आवासीय और गैर आवासीय मकतब और मदरसे स्थापित किए गये और उन्हें पर्याप्त सहायता प्रदान की गई। लाला शीलचन्द अपने तफरीहुल–इमारत नामक ग्रन्थ में लिखता है कि अजमेर से लौटने के बाद अकबर ने फतेहपुर सीकरी को राजधानी बनाया और उसने वहाँ कई भवनों के साथ मदरसों और खानकाहों का निर्माण करवाया। अकबर ने फतेहपुर सीकरी में एक बहुत बड़े कॉलेज की स्थापना की तथा कई अन्य मदरसे बनवाये। वह आगे लिखता है कि आगरा में बहुत से मदरसे थे, जहाँ मुस्लिम शिक्षा के प्रसिद्ध केन्द्र शिराज के प्रोफेसर पढ़ाया करते थे।

अकबर का मानना था कि गुणी और विद्वान विद्यमान रहने चाहिए। इसीलिए उसने उन्हें पर्याप्त संरक्षण प्रदान किया था। शिक्षा और विद्वानों को प्रत्येक संभव तरीके से प्रोत्साहित किया जाता था। योग्य छात्रों को तथा शिक्षकों को छात्रवृत्ति और भत्ते स्वीकृत किए गए और गरीब छात्रों को निःशुल्क शिक्षा देने की व्यवस्था की गई। इसी समय आर्थिक लाभ की दृष्टि से राजा टोडरमल ने स्व–धर्मियों के लिए फारसी की शिक्षा को अनिवार्य बना दिया था। फलतः हिन्दू उसी उत्साह से फारसी भाषा पढ़ने लगे जैसे आज भारतीय अंग्रेजी भाषा पढ़ते हैं। कुछ ही समय में हिन्दू मुगल प्रशासन में मुसलमानों की बराबरी करने में सक्षम हो गए।

उल्लेखनीय है कि अकबर ने मुस्लिम धार्मिक मकतबों और मदरसों के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं किया और उनको अपने पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धति को ही अपनाने दिया गया। आरबी जनसाधारण की भाषा नहीं होने से ऐसा आदेश दिया गया कि मकतबों और विद्यालयों में अरबी भाषा और साहित्य पर बल न देकर लाभप्रद विषयों पर जोर दिया जाय। शिक्षा के विषय में अकबर किसी जातीय, धार्मिक और भाषावाद तथा भौगोलिक सीमाओं को नहीं मानता था। उसने अपने पुत्रों को हिन्दी की शिक्षा दी। उसने अपने पौत्र खुसरो को प्रसिद्ध विद्वान के द्वारा हिन्दू–दर्शन की शिक्षा दिलायी तथा जेसुइट पादरी मांसरेट को अपने पुत्र मुराद का शिक्षक नियुक्त कर उसे पुर्तगाली भाषा पढ़ायी।

अकबर ने शिक्षा प्रणाली में इस बात पर बल दिया था कि शिक्षा में प्रमुख भाग शिक्षक का नहीं अपितु विद्यार्थी का होना चाहिए। विद्यार्थी को ज्ञान प्राप्त करने के लिए स्वयं परिश्रम करना चाहिए। शिक्षक का कार्य विद्यार्थियों को केवल सहायता देना होना चाहिए। इस तरह उसने बाल–केन्द्रित शिक्षा पर बल दिया। अबुल फजल बड़े गौरव के साथ लिखता है कि यद्यपि एशिया के कई सुसंस्कृत देशों ने युवकों की शिक्षा हेतु कई विद्यालय की स्थापना की, परन्तु मुगलकालीन भारतीय शिक्षा अपनी संगोष्ठी पद्धति पर विशेष ख्याति रखती है। इस स्थान पर विशेष उल्लेखनीय बिन्दु यह है कि मुगलकालीन शिक्षा पद्धति में कई प्रकार के सुधारों का श्रेय स्वयं अबुल फजल को है और इसके लिए हमें उसे प्रसन्नता से साधुवाद देना चाहिए। पाठ्यक्रम का परिमार्जन करते हुए छात्रों पर कोई बात थोपी नहीं गयी और उन्हें स्व्यं की इच्छानुसार पढ़ने का अधिकार दिया गया, किन्तु यह निश्चित किया गया कि समय के अनुसार जो पढ़ना आवश्यक है उसे सभी विद्यार्थि अनिवार्यतः पढ़ें। पाठ्यक्रम में प्रायोगिक शिक्षा पर भी बल दिया गया।

अकबर की धाय माता माध्यम अनगा विद्यानुरागी महिला थी। शिक्षा के क्षेत्र उसके अनुकरणीय प्रयास का उल्लेख करना अति आवश्यक है। उसने 1561 ई० में दिल्ली में एक मस्जिद तथा एक कॉलेज की स्थापना की थी। इस कॉलेज को उसने समस्त साधन–सुविधाओं से सम्पन्न बनाया और अनुभवी एवं योग्य शिक्षकों को अध्यापन कार्य हेतु नियुक्त किया था।

प्रसिद्ध इतिहासकार बी०एन० स्मिथ ने अकबर के पुस्तकालय की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि उसने बहुत मूल्यवान पुस्तकों का संग्रह करवाया था। उसके पुस्तकालय की समता का शायद ही कोई पुस्तकालय विश्व में रहा होगा। अकबर के समय में अन्य स्थानों से पुस्तकें लाकर शाही पुस्तकालय में रखी गई थी, जिससे पुस्तकों की संख्या में बहुत अधिक वृद्धि हो गई थी। ये पुस्तकें बिहार बंगाल, गुजरात, जौनपुर, कश्मीर और दक्षिण से विजय अभियान के समय लाई गई थीं। बदायूनी के अनुसार गुजरात विजय के बाद इतिमद खां गुजराती के कई दुर्लभ तथा मूल्यवान ग्रन्थ शाही पुस्तकालय में लाए गए। इसी प्रकार शेख फैजी की मृत्यु

के बाद उसके पुस्तकालय की 4600 पुस्तकें और पाण्डुलिपियाँ शाही पुस्तकालय में जमा की गई। साहित्य के विकास की दृष्टि से उसने एक अनुवाद विभाग खोला और इस विभाग में विभिन्न भाषाओं के भाषाविद नियुक्त किए गए। ये हिन्दी, संस्कृत, ग्रीक, अरबी और फारसी के मूल्यवान तथा उपयोगी ग्रन्थों का अन्य भाषा में अनुवाद करते थे। यह सारे अनुवादित ग्रन्थ शाही पुस्तकालय में रखे गए।

अबुलफजल के अनुसार अकबर ने पुस्तकालय को कई भागों और उपभागों में विभाजित किया था। विषयवार पुस्तकों के जिस्टर तैयार करा प्रत्येक पुस्तकों को क्रमांक दिए गए और इसी क्रम में उनको आलमारियों में व्यवस्थित रखा जाता था। एक प्रकार से केटलॉग प्रणाली को अपनाया गया था। हिन्दी, संस्कृत, फारसी, अरबी आदि विषयों की पुस्तकों को उपभागों यथा गद्य, पद्य, उपन्यास, इतिहास, भूगोल आदि में विभाजित कर ग्रन्थालय को विधिवत स्वरूप प्रदान किया गया था। अकबर ने दुर्लभ ग्रन्थों की प्रतियाँ तैयार करने के लिए सुन्दर लिखावट लिखने वाले नियुक्त किए थे। इसी प्रकार पुस्तकों का चित्रांकन करने के लिए कुशल चितेरे तथा पुस्तकों की मजबूत तथा आकर्षक जिल्द बनाने के लिए योग्य जिल्दसाजों को भी रख गया था। इस प्रकार हम देखते हैं कि अकबर ने प्रत्येक दृष्टि से पुस्तकालय को पूर्णता प्रदान करने की पूरी–पूरी कोशिश की थी। स्वयं के रूझान और मुगल बादशाहों से प्रेरणा प्राप्त कर मुगल दरबारी भी साहित्य और कला के संरक्षक बन गए थे। कुछ मुगल दरबारियों ने भी साहित्यकारों तथा विशेष गुणों से युक्त लोगों को संरक्षण दिया और पुस्तकें क्रय करके अपने निजी ग्रन्थालय बनाये थे। वे स्वयं विद्वान थे, पुस्तकों के लेखक थे तथा अध्ययन करना उनकी आदत और व्यसन बन गया था। ऐसे लोगों में बैराम खां, उसका पुत्र अब्दुर्रहीम खान–ए–खाना, शेख फैजी, अबुलफजल, मौलाना अब्दुल हक, अब्दुल कादिर बदायूनी, बख्शी निजामुद्दीन प्रमुख थे।

अब्दुर्रहीम खान–ए–खाना, अकबर के संरक्षक बैराम खां का पुत्र था। यद्यपि वह एक सेनानायक और कुशल प्रशासक था, किन्तु साहित्यिक क्षेत्र में भी उसकी उपलब्धियाँ असाधारण थी। उसने संस्कृत में खेट कौतुकम् नामक ज्योतिष ग्रन्थ की रचना की थी। रहीम कवियों, लेखकों तथा विद्वानों का उदार आश्रयदाता था। रहीम ने इलाहाबाद में एक विशाल तथा समृद्ध पुस्तकालय बनाया था। मासिर–ए–रहीमी से जानकारी मिलती है कि रहीम के पुस्तकालय की व्यवस्था हेतु लगभग 95 कर्मचारी नियुक्त थे। इस पुस्तकालय में विभिन्न विषयों की हजारों पुस्तकें थीं। इस ग्रन्थालय की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इसमें बहुत बड़ी संख्या में ऐसे ग्रन्थ थे, जो लेखक के द्वारा अपने हाथ से लिखे गये थे। कई लेखकों ने अपने हाथ से लिखित प्रतियाँ इस पुस्तकालय को भेंट स्वरूप दी थी।

आइन–ए–अकबरी से जानकारी मिलती है कि फैजी ने श्रेष्ठ पुस्तकों का एक ग्रन्थालय बनाया था। उसे अलभ्य पुस्तकों को रखने का इतना चाव था कि उसके खानदेश के शासक राजा अली खां को लिखा पत्र आज श्री बिटिश म्यूजियम में सुरक्षित है। बदायूनी के अनुसार फैजी के पुस्तकालय में 4600 पुस्तकें थी। ऐसा माना जाता है कि स्वयं फैजी ने 101 पुस्तकें लिखी थीं। उसके पुस्तकालय में साहित्य, चिकित्सा, ज्योतिष, संगीत, दर्शन, कानून, विज्ञान, गणित, इतिहास, राजनीति, धर्मशास्त्र आदि विषयों पर दुर्लभ पुस्तकें थी। इसी प्रकार अबुफजल बदायूनी, टोडरमल, बीरबल आदि दरबारियों के भी अपने–अपने पुस्तकालय रखना एक गौरव की बात समझी जाती थी। इससे यह अनुमान लगता है कि दरबारी और उच्च घरानों के सदस्य कितने ज्ञानपिपासु थे।

अकबर के समय में फतहपुर सीकरी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था। इस नगर को राजधानी बनाने के साथ कई विद्वान भी यहाँ निवास के लिए आये जिनमें अब्दुलकादिर शेख फैजी और निजामुद्दीन मुख्य थे। ये सभी विद्वान पढ़ाने का कार्य भी करते थे। जैसा कि उल्लेख किया गया है अकबर ने सीकरी में मदरसों और खानकाहों का निर्माण करवाया था। अबुलफजल ने भी यहाँ एक मदरसा बनवाया था। यहाँ के निवासियों की शिक्षा का समुचित प्रबन्ध हो जाने से शिक्षा का बड़ी गति के साथ प्रसार हुआ, किन्तु इस सम्बन्ध में यह स्मरण रखना चाहिए कि राजधानी के रूप में इसके परित्याग से इसकी प्रसिद्धि और गौरव भी समाप्त हो गया।

आगरा शिक्षा का दूसरा महत्त्वपूर्ण केन्द्र था। बादशाह अकबर तथा अन्य शिक्षा के उपासकों जैसे– जैनुद्दीन खाफी, मौलाना अलाउद्दीन लरी, मीर कलन हरीबी आदि ने आगरा में मदरसों की स्थापना की थी। आगरा में बहुत से ऐसे विद्वान थे जिनके पास

बड़ी संख्या में छात्र अध्ययन करते थे और जिन्होंने अध्ययन–अध्यापन के लिए अपना जीवन समर्पित कर रखा था। मिर्जा मुफलिस जैसे ख्याति प्राप्त विद्वान ने चार वर्ष तक जामामस्जिद में पढ़ाया था। सैयद शाहमीर समाना के पास काफी छात्र पढ़ते थे तथा उसका निवास एक कॉलेज के समान लगता था। पीटरमण्डी के अनुसार आगरा में जेसुइट्स के लिए एक कॉलेज था। आगरा के मदरसों में शिराज के मशहूर प्रोफेसर अध्यापन का कार्य करते थे। जहाँगीर ने भी अपनी आत्मकथा में लिखा है कि आगरा के निवासियों ने ज्ञान और कला के विस्तार के लिए अनेक प्रयत्न किए तथा विभिन्न धर्म तथा जाति के विद्वानों ने आगरा को अपना निवास स्थान बनाया था। दिल्ली प्रारंभ से ही मुस्लिम शिक्षा का केन्द्र रहा है। सल्तनत युग में यह राजधानी रही और मुगल बादशाहों ने भी इसकी शानशौकत को बढ़ाया था। शिक्षण संस्थाओं के साथ ही दिल्ली में बड़ी संख्या में विद्वान रहते थे, जो छात्रों को पढ़ाने के साथ ही शोध कार्य भी करते थे।

संदर्भ :

1. एस. एम. जफर, एजुकेशन इन मुस्लिम इण्डिया, पृ. 167.

2. बेवेरिज, अकबरनामा, भाग 1, पृ. 485.

3. डॉ. बी. के. सहाय, एजुकेशन एण्ड लर्निंग अण्डर दि ग्रेट मुगल्स पृ. 92.

4. अ. ब्लोचमेन, आइन–ए–अकबरी, भाग–1, पृ. 110.

5. आजाद, दरवार–ए–अकबरी, पृ. 113.

6. अ. बदायूनी, मुतखब लो भाग, 2 पृ. 330.

7. बी० एन० लुनिया, अकबर महान, पृ. 307–08.

8. बी. डे. तबकात–ए–अकवरी, भाग 2, पृ. 714.

9. ए . एल. श्रीवास्तव, अकबर महान, भाग 2, पृ. 307।

10. आईन–ए–अकबरी भाग 1, पृ. 288–891